brothers.com, for detailed information on pharmacology books, visit our website www.jaypeebrothers.com, for detailed information on pharmacology books







द्रव्यगुण आधार

द्रव्यगुण के आधारभूत सिद्धान्त

New Syllabus NCISM Paper–1

प्रो. वैद्य सोनिया धीमान

द्वितीय संस्करण

JAYPEE

विषय सूची

1.	द्रव्यगुणशास्त्रविज्ञानीयाध्याय	1
2.	द्रव्यविज्ञानीयाध्याय	12
3.	गुणविज्ञानीयाध्याय	49
4.	रसविज्ञानीयाध्याय	82
5.	विपाकविज्ञानीयाध्याय	124
6.	वीर्यविज्ञानीयाध्याय	143
7.	प्रभावविज्ञानीयाध्याय	162
8.	द्रव्याश्रित रसादि गुणों का परस्पर सम्बन्ध एवं द्रव्यों की क्रियाकरण विधि	171
9.	कर्मविज्ञानीयाध्याय	176
10.	चरकोक्तदशेमानीविज्ञानीयाध्याय	246
11.	मिश्रकगणविज्ञानीयाध्याय	300
12.	नामरूपज्ञानविज्ञानीयाध्याय	317
13.	द्रव्यपरीक्षाविज्ञानीयाध्याय	326
14.	अभावप्रतिनिधिद्रव्यविज्ञानीयाध्याय	361
15.	द्रव्यसंग्रहणविज्ञानीयाध्याय	369
16.	कृषिकरण एवं लुप्तप्रायः द्रव्यविज्ञानीयाध्याय	384
17.	फॉर्मेकोविजिलेंस तथा नेटवर्कफॉर्मेकोलोजी विज्ञानीयाध्याय	413
18.	आयुष मिनिस्ट्री संस्थान विज्ञानीयाध्याय	426
19.	वृक्षायुर्वेदविज्ञानीयाध्याय	449

अध्याय
5

विपाकविज्ञानीयाध्याय

विपाक/End Product of Metabolism

व्युत्पत्तिः- वि उपसर्ग + पच् धातु + घञ् प्रत्यय-विपाक = परिपक्व होना, परिणाम, पकना।

निरूक्ति

- **विशिष्टः जरणनिष्ठाकाले रसविशेषस्य पाकः प्रादुर्भावः विपाकः।** (प्रशस्तपाद)

  पाचन क्रिया के अन्त में उत्पन्न होने वाले विशिष्ट रस को विपाक कहते हैं। पाचन के अन्त/निष्ठाकाल में होने से इसका नाम निष्ठापाक भी है।

पर्यायः परिणाम, जरण, पाक, प्रपाक, विपाक, परिपाक, जरा, जूर्ति।

परिभाषा/लक्षण

- **जाठरेणाग्निना योगाद्यदुदेति रसान्तरम्। रसानां परिणामान्ते स विपाक इति स्मृतः॥** (अ॰ हृ॰ सू॰ 9/20)

  द्रव्य का जठराग्नि के साथ संयोग होने पर उसके रसों की परिणति होती है अतः पाककर्म के अन्त में जिस रसविशेष की उत्पत्ति होती है, उसको विपाक कहते हैं।
- **औदर्येण संश्लेषात् जरणनिष्ठाकाले रसविशेषः उत्पेद्यते, स विपाक इति स्मृतो।** (अ॰ हृ॰ सू॰ 9/20-अरूणदत्त)

  जब आहार का संयोग अग्नियों के साथ होता है, तब पाचनकाल के अन्त में जिस रस विशेष की उत्पत्ति होती है, उसे विपाक कहते हैं।
- **तत्र विपाकं लक्षयति-जाठरेणेति। रसवतां द्रव्याणां, जाठराग्निना संयोगात् यद्रसान्तरमुत्पद्यते स विपाकः॥** (अ॰ हृ॰ सू॰ 9/20-हेमाद्रि)

  रसयुक्त द्रव्यों का जठराग्नि के साथ संयोग होने पर जिस रसविशेष की उत्पत्ति होती है, उसे विपाक कहते हैं।
- **विपाकः कर्मनिष्ठया।** (च॰ सू॰ 26/66)

  आहारपाचन के पश्चात् दोष, धातु, मल की वृद्धि या ह्रास रूपी लक्षण विपाक के द्वारा होते हैं। विपाक पाचन क्रिया के अन्त में लक्षित होता है एवं शरीर में द्रव्यों के कर्मों को लक्षित करने में कारण होता है। आचार्य चरक पाक कर्म के अन्त में विपाक का प्रादुर्भाव तथा द्रव्यगत कर्मों को लक्षित करने में विपाक को कारण मानते हैं।
- **अवस्थापाकापेक्षया विशिष्टः पाकः विपाकः।** (च॰ सू॰ 26/57-शिवदाससेन)

  अवस्थापाक की अपेक्षा विशिष्ट पाक को विपाक कहते हैं।

JAYPEE BROTHERS

- **जठराग्नियोगाद् आहारस्य निष्ठाकाले यो गुणः उत्पद्यते स विपाकः।** (च॰ सू॰ 26/57-चक्रपाणि)

  जठराग्नि के साथ संयोग होने पर आहार की पाकक्रिया होती है। पाकक्रिया के अन्त में आहार के गुणों में परिवर्तन होता है तथा नवीन गुण की भी उत्पत्ति होती है, जिसे विपाक कहते हैं।

- **पाकः पचनं, द्रव्याणां स्वरूप रसयोः परावृत्तिः, सा च स्वरूपान्तरत्वेन रसान्तरत्वेन च परिणतिः, तस्याः विशेषो विपाकः।** (गंगाधर)

  द्रव्यों का पाचन होने पर उनके स्वरूप व रस में जो विशेष परिवर्तन होता है, उसे विपाक कहते हैं।

  स्वरूप परिवर्तनः **जाठराग्नियोगेन भुक्तानां द्रव्याणां जायमाने किट्ट सारम् रूपेण पृथक्त्वे यः सार भागो द्रव्यस्य आद्योरसाख्यो धातुः, किट्ट भागश्च मूत्र पुरीष रूपो मल धातुः तद्रसमल धातु भूत रसान्तरवद् द्रव्यान्तरत्वेन भुक्तानां परिणति विशेषोऽत्र विपाकः।**

  रस परिवर्तनः **रसान्तरत्वेन कस्य रसस्य, किं रसान्तरत्वेनउदयः परिणामः स्यादिति अत आह कटुतिक्तादि।** (गंगाधर)

  गंगाधर के अनुसार द्रव्यों का सार तथा किट्ट में विभाजन होने तथा उनके रस में भी परिवर्तन होकर परिणाम को प्राप्त होने को विपाक कहते हैं।

- **परिणामलक्षणो विपाकः।** (र॰ वै॰ 1/67)

  जो पाचन के अन्त में हुए आहार के परिणाम को लक्षित करे, वह विपाक है।

- **विपाकः प्रधानमिति। कस्मात्? सम्यङ्मिथ्याविपक्वत्वात्। इह सर्वद्रव्याण्यभ्यवहृतानि सम्यङ्.मिथ्याविपक्वानि गुणं दोषं वा जनयन्ति।** (सु॰ सू॰ 40/10)

  आचार्य सुश्रुत भी विपाक की प्रधानता बताते हुए कहते हैं कि द्रव्य के सम्यग् विपाक से शरीर में उसके गुणों की तथा मिथ्याविपाक से दोषों की उत्पत्ति होती है।

- **विपाकः पाकनिष्ठाजन्या द्रव्यपरिणतिः।** (द्र॰ गु॰ सू॰/5/1)

  ग्रहण किए हुए द्रव्य का पाचन क्रिया के अन्त में जो चरम परिणाम होता है, उसे विपाक कहते हैं। जठराग्नि पाक के पश्चात् भूताग्नि तथा धात्वाग्नि पाक होता है इन पाकों में भी जो निष्ठापाक (अन्तिम) है वह विपाक हो सकता है। मद्य, विष आदि व्यवायी हैं उनमें जठराग्नि पाक नहीं होता, उनकी परिणति भूताग्नि पाक द्वारा ही होती है।

- **द्रव्यगुणशास्त्रम् के अनुसार**–अग्नि के संयोग से भुक्त द्रव्य का शरीरसुखानुबन्धनार्थ रूपान्तर तथा रसान्तर होता है। द्रव्य का सम्पूर्ण ज्ञान केवल रस के ज्ञान से नहीं होता, जिह्वा निपात से रस का ज्ञान होता है, अग्नि के संयोग से कुछ रसों में कोई परिवर्तन नहीं होता परन्तु कुछ रसों का रसान्तर होता है, वह शरीर पर होने वाले कर्म से लक्षित होता है। यथा–मधुर रस अग्नि संयोग से मधुर ही रहेगा ऐसा आवश्यक नहीं है। मधु निपात से मधुर परन्तु अग्नि संयोग से कटु हो जाता है। जो उसके कर्षण कर्म से लक्षित होता है अतः मधु का विपाक कटु माना जाता है। द्रव्य का रसान्तरित रस, रस धातु के साथ सम्पूर्ण शरीर में भ्रमण करता है तथा धात्वाग्नि के साथ संयोग करके पुनः पाक को प्राप्त होता है तथा धातु गुण सामान्य से तत् धातु की वृद्धि तथा विशेष धातु का ह्रास करता है।

अवस्थापाक एवं निष्ठापाक (विपाक)

पाकः–स्थूलात् सूक्ष्मस्य परिवर्तनं पाकः भवति। (च॰ वि॰ 2/18-चक्रपाणि)

स्थूल आहार का दोष, धातु, मल तथा इन्द्रियों का पोषण करने के लिए सूक्ष्म में परिवर्तन होना पाक कहलाता है।

JAYPEE BROTHERS

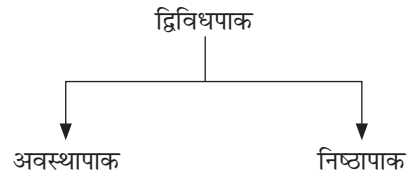

अवस्थापाक

1. प्रथमावस्थापाक

- **अन्नस्य भुक्तमात्रस्य षड् रसस्य प्रपाकतः। मधुराद्यात् कफो भावात् फेनभूत उदीर्यते॥** (च॰ चि॰ 15/9)
  भोजन के तत्काल बाद षड्रसयुक्त आहार का प्रपाक होता है तथा मधुर रस की एवं फेनभूत कफ की उत्पत्ति होती है।
- **मधुरो हृदयादूर्ध्वं रसः कोष्ठे व्यवस्थितः। ततः संवर्धते श्लेष्मा शरीरबलवर्धनः॥** (च॰ चि॰ 15/9-चक्रपाणि)
  कफ का स्वाभाविक स्थान आमाशय है, अतः वहाँ आए हुए अन्न का कफ के साथ मिश्रण होता है तथा वह मधुर रस युक्त हो जाता है एवं मल रूप कफ की वृद्धि होती है।

2. द्वितीयावस्थापाक

- **परं तु पच्यमानस्य विदग्धस्याम्लभावतः। आशयाच्च्यवमानस्य पित्तमच्छमुदीर्यते॥** (च॰ चि॰ 15/10)
  पच्यमानावस्था को प्राप्त होते ही आहार विदग्ध होकर पित्तस्थान में जाता है, तब अम्ल रस युक्त होता है एवं वहाँ से अच्छपित्त का स्त्राव होकर शरीर में पित्त की वृद्धि होती है।
- **नाभीहृदयमध्ये च रसस्त्वम्लो व्यवस्थितः। स्वभावेन मनुष्याणां ततः पित्तं विवर्धते॥** (च॰ चि॰ 15/10-चक्रपाणि)
  नाभी तथा हृदय के मध्य में पित्ताशय होता है जो पित्त का स्वाभाविक स्थान है तथा पित्त का रस अम्ल है। अतः आहार पच्यमानावस्था में विदग्ध होकर पच्यमानाशय में जाकर अम्लीभूत होता है एवं स्वभाव से पित्त की वृद्धि होती है।

3. तृतीयावस्थापाक

- **पक्वाशयं तु प्राप्तस्य शोष्यमाणस्य वह्निना। परिपिण्डितपक्वस्य वायुः स्यात्कटुभावतः॥**
  (च॰ चि॰ 15/11)
  पक्वाशय को प्राप्त होकर आहार अग्नि के द्वारा शोषित होकर पिण्डित होता है। पक्वाशय वायु का स्वाभाविक स्थान है एवं वायु का रस कटु है, अतः आहार कटु रस युक्त होकर वात की वृद्धि करता है।
- **अधो नाभ्यास्तु खल्वेकः कटुकोऽवस्थितो रसः। प्रायः श्रेष्ठतमस्तत्र प्राणिनां वर्धतेअनिलः॥**
  (च॰ चि॰ 15/11-चक्रपाणि)

JAYPEE BROTHERS

कटु रस नाभी के अधो भाग में व्यवस्थित होता है, वहाँ जाकर आहार कटु रस युक्त होता है एवं प्राणियों में अनिल (वात) का वर्धन करता है।

निष्ठापाक/विपाक

- **विपाकस्तु रसमलविवेकः समकालो। भिन्नकाल एवावस्थापाकैः समं इति न विराधः।।** (चक्रपाणि)

  विपाक की उत्पत्ति रसमलविवेक (रस तथा किट्ट विभाजन) के काल में होती है इससे भिन्न को अवस्थापाक जानें।
- **तस्मात् विपाकास्त्रिविधो रसानां नात्र संशयः।** (च॰ चि॰ 15/11-चक्रपाणि)

  विपाक भी त्रिविध होता है, जिसमें इन्हीं तीन रसों की उत्पत्ति होती है, परन्तु अवस्थापाक में उत्पन्न रसों को उससे भिन्न जानें।

अवस्थापाक (Stages of digestion)	विपाक (Final product of digestion)
• महास्त्रोत की अवस्था के वशीभूत होकर मधुर, अम्ल, कटु रस की उत्पत्ति जब प्रत्येक आहार एवं औषध में होती है, उसे अवस्थापाक कहते हैं।	महास्त्रोत की अवस्था से स्वतन्त्र जब प्रत्येक द्रव्य का रसान्तर हो तथा अन्त में या तो मधुर या अम्ल या कटु रस की उत्पत्ति होती है उसे विपाक कहते हैं।
• अवस्थाभेद से सभी द्रव्यों में क्रमशः मधुर, अम्ल, कटु रस की उत्पत्ति होती है।	प्रत्येक द्रव्य में अपना विशिष्ट पाक विपाक कहलाता है।
• भुक्त द्रव्य का प्रथम पाक अवस्थापाक है।	भुक्त द्रव्य का अन्तिम पाक विपाक है।
• यह आमाशय (प्रथमावस्थापाक), पच्यमानाशय (द्वितीयावस्थापाक) तथा पक्वाशय (तृतीयावस्थापाक) में सम्पन्न होता है।	रस एवं किट्ट के विभाजन के समय होने वाला द्रव्य का विशिष्ट पाक विपाक है।
• (शरीरबलवर्धन, श्लेष्मवर्धन), पित्तवर्धन, वायुवर्धन यह कर्म क्रमशः तीनों अवस्थापाकों में होते हैं।	प्रत्येक द्रव्य में विशिष्ट रस के उत्पत्ति होकर वह रसादि धातु के साथ सम्पूर्ण शरीर में फैल कर तत् तत् धातु की वृद्धि एवं क्षय करता है।
• मल रूप दोषों (कफ, पित्त, वात) की उत्पत्ति अवस्था पाकों में होती है।	धातु रूप दोषों (कफ, पित्त, वात) की उत्पत्ति विपाक में होती है।
• केवल जठराग्नि पाक द्वारा ही अवस्थापाक होता है।	जठराग्नि, भूताग्नि, धात्वाग्नि द्वारा होने वाला अन्तिम पाक है।
• यह प्रत्यक्षगम्य है।	यह अनुमानगम्य है।

JAYPEE BROTHERS

प्रवाह संचित्र

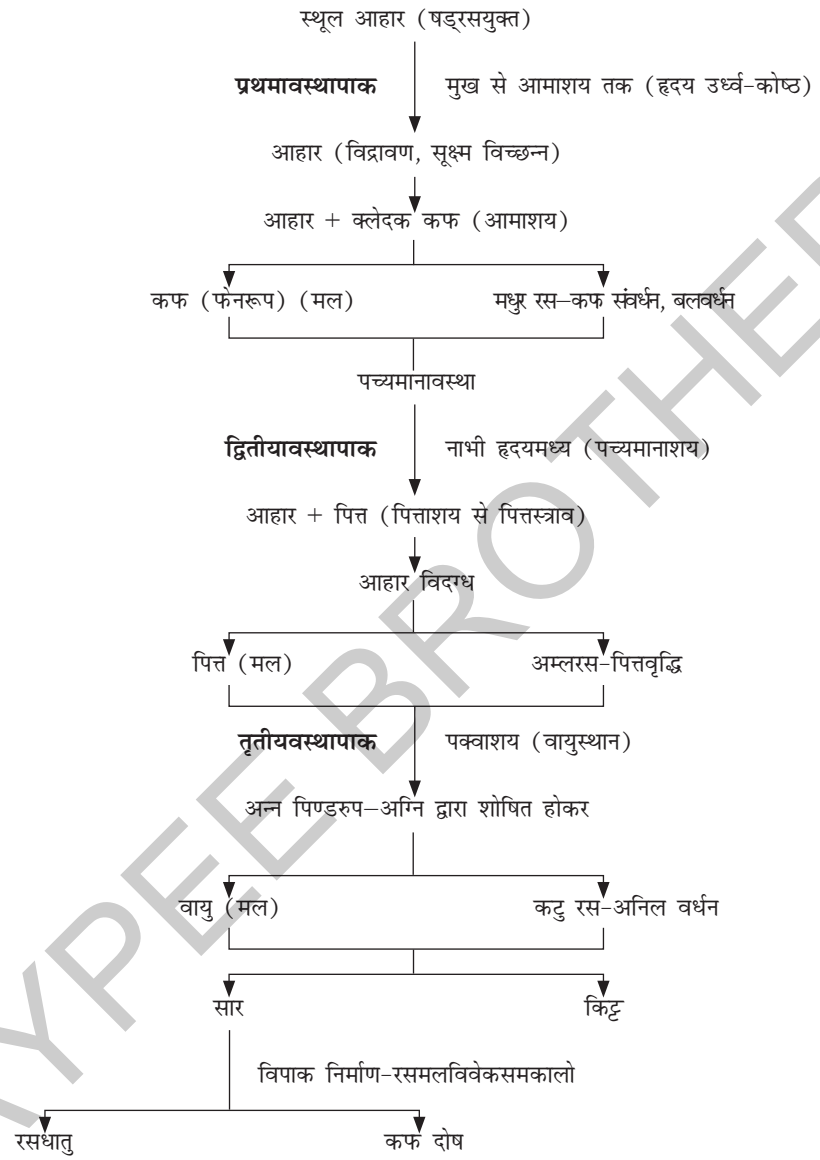

विपाक रसधातु के साथ मिलकर सम्पूर्ण शरीर में भ्रमण कर अपना कार्य करता है।

JAYPEE BROTHERS

विपाक का स्वरूप

आहार द्रव्य का विपाक

- **अह्रियते इति आहारः।**
  जो द्रव्य गले द्वारा ग्रहण हो वह आहार है, अतः आहार शब्द से अन्न-पान तथा औषध द्रव्य सबका ग्रहण होता है।
- **अत्र रसशब्दः रसादिधातून् लक्षयति तेनात्र धात्वग्निपाकस्य मुख्यता, वीर्यशब्दश्च गुणवाचकः अतः गुणात्मकं भूताग्निपाकं द्योतयति।** (द्र० गु० सू०/5/1)
  रस शब्द रसादि धातु का बोधक है, अतः आहार का विशिष्ट पाक धात्वाग्नि पाक होगा तथा वीर्य शब्द गुण वाचक है, अतः औषध द्रव्य का विशिष्ट पाक भूताग्नि पाक होगा।
- **नाभिस्तनान्तरं जन्तोरामाशय इति स्मृतः। अशितं खादितं पीतं लीढं चात्र विपच्यते॥ आमाशयगतः पाकमाहारः प्राप्य केवलम्। पक्वः सर्वाशयं पश्चाद्धमनीभिः प्रपद्यते॥** (च० वि० 2/17-18)
  नाभि और स्तन के मध्य में आमाशय होता है, वहीं पर चार प्रकार के आहार का पाक होता है। जब आमाशय में गए हुए आहार का पाक हो जाता है, तब सम्पूर्ण शरीर में आहार रस धमनियों द्वारा भ्रमण करता है।
- **भौमाप्याग्नेयवायव्याः पञ्चोष्माणः सनाभसाः। पञ्चाहारगुणान्स्वान्यार्थिवादीन्पचन्ति हि॥** (च० चि० 15/13)
  पाँच प्रकार की भूताग्नियाँ आहार के पार्थिव आदि गुणों को पचाती हैं तथा शरीर में तत् तत् गुणों की वृद्धि होती है। यथा-पार्थिवाग्नि से आहार के पार्थिव अंश का पाचन होगा तथा शरीर में पार्थिव धातु (मांसादि) की वृद्धि होगी।
- **जाठरेणाग्निना पूर्वं कृते संघातभेदे। पश्चाद् भूताग्नयः पञ्च स्वं स्वं द्रव्यं पचन्ति हि॥** (च० चि० 15/13 चक्रपाणि)
  पूर्व में जठराग्नि आहार के संघात का भेदन करती है, उसके पश्चात पाँचभूतानियाँ अपने-अपने द्रव्यों का पाचन करती हैं।
- **पञ्चभूतात्मके देहे ह्याहारः पाञ्चभौतिकः। विपक्वः पञ्चधा सम्यग् गुणान् स्वानभिवर्द्धयेत्।** (सु० सू० 46/533)
  आहार का पाँच प्रकार की भूताग्नियों के द्वारा विशिष्ट पाक होता है तथा आहार शरीर में अपने-अपने गुण वाले शारीरिक अंगों या धातुओं का अभिवर्धन करता है। वास्तव में द्रव्य तथा शरीर दोनों ही पंचभौतिक होने के कारण, भूतपरिणाम ही चरम परिणाम है तथा धात्वाग्नि एवं जठराग्नि पाक सहायक हैं।

पाक का फल

विविधमशितं पीतं लीढं खादितं जन्तोर्हितमन्तरग्निसन्धुक्षितबलेन यथास्वेनोष्मणा सम्यग्विपच्यमानं काल-वदनव स्थितसर्वधातुपाकमनुपहतसर्वधातूष्ममारूतस्रोतः केवलं शरीरमुपचयबलवर्णसुखायुषा योजयति शरीरधातूनूर्जयति च॥ (च० सू० 28/3)

अनेक प्रकार के हितकर आहार का सेवन करने पर जठराग्नि के बल से अपनी-अपनी पंचभौतिक अग्नि द्वारा पाक होकर काल की तरह पूर्ण धातुओं को प्राप्त होता हुआ तथा वहां न रुकता हुआ सम्पूर्ण शरीर को उपचय (वृद्धि) बल, वर्ण, सुख और आयु से युक्त करता है तथा शारीरिक धातुओं को उर्जा प्रदान करता है।

औषध द्रव्य का विपाक

- **रसप्रधानमाहारद्रव्यम्, वीर्यप्रधानमौषधद्रव्यमिति।** (चक्रपाणि)
  रस प्रधान आहार द्रव्य तथा वीर्य प्रधान औषध द्रव्य होते हैं। रस शब्द रसादि धातु को लक्षित करता है एवं वीर्य शब्द गुणवाचक है, यही आहार एवं औषध में भेद है।

JYPEE BROTHERS

- **भौतिकेनाग्निना योगाद्यदुदेति गुणान्तरम्। द्रव्याणां परिणामान्ते स विपाक इति स्मृतः॥** (द्र॰ गु॰ सू॰/5/1)

  भौतिक अग्नि के संयोग होने पर अन्त में जो परिणाम द्रव्यों में स्वरूप गुणान्तर उत्पन्न होता है, उसे विपाक कहते हैं।

आहार द्रव्य	• सामान्य पाक–जठराग्नि, भूताग्नि	• विशिष्ट पाक–धात्वाग्नि
औषध द्रव्य	• सामान्य पाक–जठराग्नि	• विशिष्ट पाक–भूताग्नि
व्यवायी द्रव्य (मद्य, विष)		• विशिष्ट पाक–भूताग्नि

औषध द्रव्यों पर जठराग्नि का स्वाभाविक कार्य होने के पश्चात् भूताग्नि द्वारा परिणमन होता है तथा वह प्रसाद और मल भाग में विभाजित होते हैं, वस्तुतः शरीर और द्रव्य दोनों ही पंचभौतिक हैं।

अवस्थापाक एवं STAGES OF METABOLISM में समन्वय

	अवस्थापाक	Stages of Metabolism
प्रथमावस्थापाक	हृदयोर्ध्व भाग में आहार मधुर रस युक्त होता है।	Digestion of carbohydrates starts from mouth by salivary amylase present in saliva and completes in duodenum by pancreatic amylase secreted with pancreatic juices.
द्वितीयावस्थापाक	पच्यमानाशय में आहार पित्तयुक्त होकर अम्लीभूत होता है।	**Secretion of bile and pancreatic juices:** • Digestion of fats is done by pancreatic lipase and bile in duodenum. • Digestion of protein starts in stomach by pepsin but main digestion starts in small intestine by pancreatic proteases.
तृतीयावस्थापाक	पक्वाशयगत आहार पिण्डीभूत होता है।	Colon is main site of water absorption hence stool becomes hard.

विपाक एवं END PRODUCT OF METABOLISM में समन्वय

विपाक	End product of metabolism
मधुर विपाक	Carbohydrates—Glucose
अम्ल विपाक	Protein—Amino acids
कटु विपाक	Fats—Fatty acids

विपाक का कार्यक्षेत्र एवं उपलब्धि

- **चरक के अनुसारः** प्रपाक शब्द अवस्थापाक के लिए कहा गया है।
  विपाकः कर्मनिष्ठया–विपाक को अन्तिम पाक कहा गया है।
- **गंगाधर के अनुसारः** आहार रस के गुणस्वरूप विपाक की स्थिति मानी है।
- **शिवदाससेन के अनुसारः** अवस्थापाक की अपेक्षा विशिष्ट पाक को विपाक कहा जाता है।
- **रसवैशेषिक के अनुसारः**

  परिणामलक्षणो विपाकः।

  जो किसी द्रव्य के परिणाम को लक्षित करे, वह विपाक है।

JAYPEE BROTHERS

- **चक्रपाणि के अनुसार:**
  - **कर्मनिष्ठयेति कर्मणो निष्ठा निष्पत्तिः कर्मनिष्ठा क्रियापरिसमाप्तिः।** (च॰ सू॰ 26/66-चक्रपाणि)

    विपाक का ज्ञान पाककर्म के निष्ठाकाल (समाप्ति) में होता है। अर्थात् पाककर्म की परिसमाप्ति होने पर विपाक के द्वारा जब शरीर में दोष, धातु, मल की क्षय-वृद्धि आदि लक्षित होती है तब अनुमान प्रमाण द्वारा विपाक का ज्ञान होता है।
  - **विपाकस्तु रसमलविवेकः समकालो। भिन्नकाल एवावस्थापाकैः समं इति न विराधः।।**

    विपाक की उत्पत्ति रसमलविवेक (रस तथा किट्ट विभाजन) के काल में होती है इससे भिन्न को अवस्थापाक जानें।

अतः विपाक द्रव्य का अन्तिम परिणाम है जिसका आगे रस और अवस्था में परिवर्तन नहीं होता है।

विपाक के प्रकार

विपाक के प्रकारों में निम्नलिखित मत हैं:

- षड्विधविपाकवाद–यथारसविपाकवाद, अनियतविपाकवाद (योगेन्दरनाथसेन आदि आचार्य)
- पंचविधविपाकवाद (सुश्रुत)
- चत्वारविपाकवाद (पराशर)
- त्रिविधविपाकवाद (चरक, वाग्भट)
- द्विविधविपाकवाद (सुश्रुत, नागार्जुन)

षड्विधविपाकवाद

1. **यथारसविपाकवाद (योगेन्दरनाथसेन आदि आचार्य):**
   - **तत्राहुरन्ये प्रतिरसं पाक इति।** (सु॰ सू॰ 40/11)
   - **मधुरो मधुरस्याम्लोऽम्लस्यैवं सर्वेषामिति केचिदाहुः। दृष्टान्तं चोपदिशन्ति-यथा तावत् क्षीरमुखागतं। पच्यमानं मधुरमेव स्यात्तथा शालियवमुद्गयः प्रकीर्णाः स्वभावमुत्तरकालेऽपि न परित्यजन्ति तद्वदिति।।**

(सु॰ सू॰ 40/12)

आचार्य सुश्रुत कहते हैं कि कुछ आचार्य षड्विधविपाक (यथारसविपाक) को मानते हैं। उनके अनुसार मधुर रस का मधुर विपाक, अम्ल रस का अम्ल विपाक, लवण रस का लवण विपाक, कटु रस का कटु विपाक, तिक्त रस का तिक्त विपाक, कषाय रस का कषाय विपाक होता है।

दृष्टान्त–ऊखा (पात्र) मे पका हुआ दूध प्रारम्भ से अन्त तक मधुर ही रहता है। यव, मुद्ग, शालि आदि खेत में बोने से लेकर अंकुरित होकर पकने तक स्वभाव का परित्याग नहीं करते हैं उसी प्रकार रस भी पकने पर अपने स्वभाव को नहीं छोड़ते हैं।

खण्डन:

वाग्भट-

- **यथारसं जगुः पाकाः षट् केचित्तद्रसाम्प्रतम्। यत्स्वादुर्व्रीहिरम्लत्वं न चाम्लमपि दाडिमम्। याति तैलं च कटुतां कटुकाऽपि न पिप्पली। यथारसत्वे पाकानां न स्यादेवं विपर्ययः।।**

(अ॰ सं॰ सू॰ 17/37-38)

यदि मधुर रस का मधुर विपाक आदि होते हैं, तो निम्नलिखित अपवाद कैसे हो सकते हैं?

मधुर व्रिहि	–	अम्ल विपाक	कटु पिप्पली	–	मधुर विपाक
अम्ल दाडिम	–	मधुर विपाक	तिक्त पटोल	–	मधुर विपाक
मधुर तैल	–	कटु विपाक	अम्ल आमलकी	–	मधुर विपाक

इससे सिद्ध होता है कि यथारसविपाक नहीं होता।

JAYPEE BROTHERS

नागार्जुन-

- **न, भिन्नलक्षणत्वात्** (र० वै० 4/132)
- **रसलक्षणमास्वादः** (र० वै० 1/65)
- **परिणामलक्षणो विपाकः।** (र० वै० 1/167)

रस तथा विपाक के लक्षण भिन्न होते हैं। रस आस्वाद ग्राह्य एवं प्रत्यक्षगम्य है तथा विपाक परिणाम ग्राह्य एवं अनुमानगम्य है। यदि रस के सदृश विपाक होता है तो उसके वर्णन की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए।

2. **अनियतविपाकवाद (योगेन्दरनाथसेन आदि आचार्य)-**
   - **केचिद्वदन्ति-अबलबन्तो बलवतां वशमायान्तीति। एवमनवस्थितिः; तस्मादसिद्धान्त एषः।।** (सु० सू० 40/10)

   सुश्रुत संहिता में वर्णन है कि कुछ आचार्य कहते हैं कि इन रसों में जो बलहीन होते हैं वो बलवान के वश में हो जाते हैं। इस सम्प्रदाय के अनुसार भी विपाक की संख्या 6 ही होती है, परन्तु किस रस का क्या विपाक होगा, यह कहना कठिन है।

   खण्डन–सुश्रुत ने इसका खण्डन करते हुए कहा है कि जिस प्रकार यथारस ग्राह्य नहीं है उसी प्रकार अनियतविपाक भी ग्राह्य नहीं है तथा इस मत में तो अनवस्थता तथा अनियमितता भी सिद्ध होती है जो वैज्ञानिक दृष्टि से ग्राह्य नहीं है अतः यह भी स्वीकार्य नहीं है।

पंचविधविपाकवाद (सुश्रुत)

- **पञ्चभूतात्मके देहे ह्याहारः पाञ्चभौतिकः। विपक्वः पञ्चधा सम्यग् गुणान् स्वानभिवर्द्धयेत्।।** (सु० सू० 46/526)

सुश्रुत ने आहार के पंचविधविपाक माने हैं यथा-पार्थिव, आप्य, वायव्य, आग्नेय, नाभस। जो पंचमहाभूतों के सिद्धान्त पर आधारित है। उनके अनुसार शरीर एवं आहार दोनों पंचभूतात्मक होते हैं तथा आहार, पाँच प्रकार की भूताग्नि के द्वारा ही पाक होता है, अतः विपाक 5 प्रकार का होता है।

खण्डन–पंचविधविपाक-द्विविधविपाक का ही एक रूप है यह दोनों ही भौतिक विपाक के भिन्न-भिन्न रूप हैं। महाभूत भी गुरु एवं लघु में विभाजित होकर दो प्रकार के ही हो जाते हैं, अतः यह एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

चत्वारविपाकवाद/रसविपाकवाद (पराशर)

- **पाकास्त्रयो रसानामम्लोऽम्लं पच्यते कटुः कटुकम्। चत्वारोऽन्ये मधुरं संसृष्टरसास्तु संसृष्टम्।।**
  कटुतिक्तकषायाणां कटुको येषां विपाक इति पक्षः। तेषां पित्तविघात तिक्तकषायौ कथं भवतः।।

(अ० सं० सू० 17/19-20-पराशर)

आधार	-	**त्रिदोष**
अम्लरस	-	अम्ल विपाक
कटु रस	-	कटु विपाक
मधुर, लवण, तिक्त, कषाय	-	मधुर विपाक
संसृष्ट (मिश्रित) रस	-	संसृष्ट विपाक

तथा इन्होनें तिक्त कषाय का कटु विपाक होने में सन्देह व्यक्त किया है कि यदि ऐसा है तो तिक्त, कषाय रस पित्तहरण कर्म किस प्रकार कर सकते हैं?

खण्डन

- तिक्त, कषाय रस में पित्तहत्व के लिए मधुर विपाक आवश्यक नहीं है वहां पर रस द्वारा भी कार्य हो सकता है। यथा–निम्ब में तिक्त रस तथा कटु विपाक है परन्तु वह पित्तहर है यह कार्य तिक्त रस द्वारा ही होता है, अतः जहाँ कटु विपाक अधिक बलवान होता है वहाँ पर वह पित्तकर होता है।

JAYPEE BROTHERS

- संसृष्ट रस में भी बलवान रस के आधार पर ही उस द्रव्य का विपाक होता है वहाँ पर मिश्रित विपाक नहीं होते, अतः यह नियम मान्य नहीं है।

त्रिविधविपाकवाद (चरक, वाग्भट)

आचार्य चरक के अनुसार त्रिविध विपाकः

- **कटुतिक्तकषायाणां विपाकः प्रायशः कटुः। अम्लोऽम्लं पच्यते, स्वादुर्मधुरं लवणस्तथा।।** (च॰ सू॰ 26/58)

कटु, तिक्त, कषाय रस	–	प्रायः कटु विपाक
अम्ल रस	–	प्रायः अम्ल विपाक
मधुर, लवण	–	प्रायः मधुर विपाक

खण्डन

आत्रेय सम्प्रदाय ने तीन प्रकार का विपाक माना है परन्तु इस सन्दर्भ में प्रायशः शब्द लगाकर अपवाद को सूचित किया गया है क्योंकि नियम के अनुसार कटु रस का विपाक कटु है परन्तु पिप्पली का विपाक मधुर है, जो अपवाद है।

- **शिवदाससेन भी त्रिदोष को विपाक की निष्पत्ति में कारण मानते हुए त्रिविध विपाक मानते हैं।**

कफ, कफवात	– मधुर विपाक
कफ, पित्त	– अम्ल विपाक
पित्त	– कटु विपाक

खण्डनः यह संगत नहीं है क्योंकि विपाक दोषावस्था का कारण है, कार्य नहीं है।

आचार्य प्रियव्रत शर्मा जी के अनुसार त्रिविध विपाक –

- **स च त्रिधा रसभेदात् दोषप्रभावतश्च-मधुरोऽम्लः कटुकश्चेति। अत्र मधुरो गुरुः, कटुको लघुरिति। अम्ल पाको लघुपाके एव अन्तर्भवति।।** (द्र॰ गु॰ सू॰/5/2)

रसभेद तथा दोषप्रभाव के आधार पर यह विपाक को तीन प्रकार का मानते हैं–

1. मधुर	–	गुरु	–	वातशामक	–	पित्तशामक	– कफवर्धक
2. अम्ल	–	लघु	–	वातशामक	–	पित्तवर्धक	– कफवर्धक
3. कटु	–	लघु	–	वातवर्धक	–	पित्तवर्धक	– कफशामक

द्विविधविपाकवादियों द्वारा त्रिवधविपाक का खण्डन

सुश्रुत–

- **तत्तु न सम्यक्, भूतगुणादागमाच्चान्योऽम्लो विपाको नास्ति। पित्तं हि विदग्धमम्ल तामुपैत्यग्नेर्मन्दत्वात्। यद्येवं लवणोऽप्यन्यः पाको भविष्यति, श्लेष्मा हि विदग्धो लवणतामुपैतीति।।** (सु॰ सू॰ 40/11)

आचार्य सुश्रुत ने त्रिविधविपाक का खण्डन करते हुए कहा है कि पंचभौतिक गुणों तथा तथा आगम के आधार पर अन्य अम्ल विपाक सिद्ध नहीं होता है। पित्त का प्राकृतिक रस कटु है तथा अग्निमन्दता के कारण पित्त विदग्ध होकर अम्ल रस हो जाता है, अतः अम्लता आवस्थिक है प्राकृतिक नहीं है। यदि अम्ल को विपाक माना जाए तो लवण को भी चौथा विपाक मानना होगा क्योंकि कफ की विदग्धावस्था लवण है, परन्तु ऐसा नहीं है अतः अम्ल को विपाक नहीं मानना चाहिए।

समाधान–आचार्य चरक के अनुसार अम्ल रस पित्त का प्राकृतिक रस है, अतः आत्रेय सम्प्रदाय ने त्रिविध विपाक को ही माना, परन्तु सुश्रुत के अनुसार अम्ल रस पित्त की विदग्धावस्था के कारण उत्पन्न होता है, इसलिए सुश्रुत को शंका उत्पन्न हुई होगी।

JAYPEE BROTHERS

नागार्जुन-

उनके अनुसार दो ही प्रकार का विपाक होता है त्रिविध विपाक नहीं हो सकता है, जिसके कारण निम्नलिखित हैं-

1. **पाचनकाल की दृष्टि से दो ही प्रकार के काल हैं-**
   - चिरकाली–गुरु विपाक
   - अचिरकाली–लघु विपाक
2. **गुण की दृष्टि से दो ही प्रकार के विपाक होते हैं-**
   - गुरु विपाक
   - लघु विपाक
3. **रस की दृष्टि से दो ही प्रकार का विपाक होता है-**

विपाक	दोष	महाभूत
मधुर	कफ	जल, पृथ्वी
कटु	वातपित्त	वायु, अग्नि, आकाश

द्विविधविपाकवाद (सुश्रुत, नागार्जुन)

सुश्रुत के अनुसार-

- **आगमे हि द्विविध एव पाको मधुरः कटुकश्च। तयोर्मधुराख्यो गुरुः, कटुकाख्यो लघुरिति। तत्र पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशानां द्वैविध्यं भवति गुणसाधर्म्याद् गुरुता लघुता च। पृथिव्यापश्च गुर्व्यः, शेषाणि लघूनि तस्माद् द्विविध एव पाक इति।** (सु॰ सू॰ 40/13)

आचार्य सुश्रुत कहते हैं कि आगम (शास्त्र) ने दो प्रकार के विपाक को स्वीकार किया है यथा मधुर एवं कटु। मधुर को गुरु एवं लघु को कटु बताया गया है अतः आचार्य सुश्रुत आगम तथा पंचमहाभूत के आधार पर विपाक को दो प्रकार का मानते हैं एवं गुण साधर्म्य से महाभूतों के भी दो ही भेद मानते हैं-

- मधुर विपाक – गुरु विपाक
- कटु विपाक – लघु विपाक
- गुरु – पृथ्वी + जल
- लघु – तेज + वायु + आकाश

आचार्य प्रियव्रत शर्मा जी के अनुसार-

- **द्विधा च गुणभेदात् गुरुर्लघुश्चेति।** (द्र॰ गु॰ सू॰ 5/2)

गुण के आधार पर विपाक दो प्रकार का होता है, यथा-गुरु एवं लघु।

नागार्जुन के अनुसार-

- **गुणा विपाकयोः कारणम्, शीतस्निग्धगुरुपिच्छिला गुरुविपाकस्य, लघुरुक्षविशदतीक्ष्णा लघुविपाकस्येति।** (र॰ वै॰ 4/51)
  - शीत, स्निग्ध, गुरु, पिच्छिल गुणयुक्त द्रव्य – गुरु विपाक
  - लघु, रुक्ष, विशद, तीक्ष्ण गुणवत द्रव्य – लघु विपाक
- **द्वौ, दैविध्यदर्शनात् परिणामस्य। यथा खदिरसारादीनि चिरादग्निसंयोगे परिणामं गच्छन्ति पल्लादिन्यचिरादिति।** (र॰ वै॰ 4/50)

आहार का परिणाम दो प्रकार का होता है। यथा-चिरपाकी (खदिरसार आदि) एवं अचिरपाकी (पल्लादि)। परिणाम के कारण ही महाभूतों के गुण भी होते हैं।

खण्डन–चिरपाक तथा अचिरपाक तो अवस्थापाक है यह विपाक कैसे हो सकता है?

समाधान–नागार्जुन विपाक में अवस्थापाक का भी समावेश करते हैं तथा परिणाममात्र को विपाक कहते हैं। आत्रेय सम्प्रदाय परिणाम को नहीं परन्तु परिणामान्त को विपाक मानते हैं। यथा-रसानाम् परिणामन्ते स विपाक इति स्मृतः।

JAYPEE BROTHERS

त्रिविध तथा द्विविध विपाकवाद का समन्वय

चरक व सुश्रुत आचार्य दोनों ही मधुर तथा कटु को विपाक कहते हैं परन्तु चरक मुख्य रूप से तथा सुश्रुत गौण रूप से कहते हैं, मतभेद के स्थल पर केवल अम्लविपाक है। चरक, पित्त का प्राकृतिक रस अम्ल तथा कटु को मानते हैं अतः उन्होंने अम्ल को विपाक माना है; परन्तु सुश्रुत अम्ल को पित्त की विदग्धावस्थाजन्य रस मानते हैं अतः उन्हें शंका उत्पन्न हुई अम्ल रस का विपाक कैसा होता है, यह सुश्रुत ने भी स्पष्ट नहीं किया है।

अम्ल रस-पृथ्वी (गुरु) + अग्नि (लघु)

अम्ल विपाक के गुरु - लघु होने में मतमतान्तर–

आचार्य	गुण
गंगाधर, प्रियव्रत शर्मा	लघु
योगेन्द्रनाथसेन, शिवदाससेन, चक्रपाणि	गुरु

अम्ल विपाक के गुरु - लघु होने का निर्णय - कर्मनिष्ठा/परिणाम लक्षण के आधार पर निर्णय करना चाहिए।

विपाक के गुणकर्म

त्रिविध विपाक के गुणकर्म–

- **शुक्रहा बद्धविण्मूत्रो विपाको वातलः कटुः। मधुरः सृष्टविण्मूत्रो विपाकः कफशुक्रलः। पित्तकृत् सृष्टविण्मूत्रः पाकोऽम्लः शुक्रनाशनः। तेषां गुरुः स्यान्मधुरः कटुकाम्लावतोऽन्यथा।** (च॰ सू॰ 26/61-62)
- **मधुरः श्लेष्मलः सृष्टमलो धातुविवर्धनः। पित्तकृत् सृष्टविण्मूत्राः पाकेऽम्लो धातुनाशनः। धातुघ्नो बद्धविण्मूत्रो विपाके वातलः कटुः। तेषां गुरुः स्यान्मधुरः कटुकाम्लावतोऽन्यथा।।** (प्रि॰ नि॰/द्र॰/36-37)

विपाक	गुण		दोषकर्म	धातुकर्म	मलकर्म
मधुरविपाक	स्निग्ध	गुरु	कफवर्धक	शुक्रल	सृष्टविण्मूत्र
अम्लविपाक	स्निग्ध	लघु	पित्तवर्धक	शुक्रनाशन	सृष्टविण्मूत्र
कटुविपाक	रुक्ष	लघु	वातवर्धक	शुक्रनाशन	बद्धविण्मूत्र

द्विविध विपाक के गुणकर्म-

- **गुरुपाकः सृष्टविण्मूत्रतया कफोत्क्लेशेन च, लघुर्बद्धविण्मूत्रतया मारुतकोपेन च। गुरुपाको वातपित्तघ्नः, लघुपाकः श्लेष्मघ्नः।।** (सु॰ सू॰ 41/11)
- **गुरुर्विपाको बृंहणः लघुर्लङ्घनश्चेति।** (द्र॰ गु॰ सू॰/5/4)

विपाक	दोषकर्म	मलकर्म	अन्यकर्म
गुरु (मधुर)	कफवर्धक, वातपित्तहर	सृष्टविण्मूत्र	बृंहण
लघु (कटु)	वातपित्तवर्धक, कफहर	बद्धविण्मूत्र	लङ्घन

गुरु विपाक के सृष्टविण्मूत्र तथा वातहर कर्म अम्ल विपाक में मिलते हैं परन्तु पित्तवर्धक, शुक्रनाशक कर्म लघु विपाक के हैं इसे लघु विपाक मानना चाहिए।

आचार्य वाग्भट के अनुसार विपाक के गुण कर्म–

- **रसैरसौ तुल्यफलस्तत्र द्रव्यं शुभाशुभम्।** (अ॰ हृ॰ सू॰ 9/22)

वाग्भट्ट के अनुसार रस के सदृश ही विपाक का कर्म भी होता है यथा मधुर रस का जो कर्म होगा, वही मधुर विपाक का भी होता है, केवल अन्तर यह है कि शरीर के अन्य जो साक्षात् शारीरिक प्रभाव तथा मानसिक प्रभाव होते हैं वे विपाक के नहीं होते हैं।

JAYPEE BROTHERS

for detailed information on pharmacology books, visit our website www.jaypeebrothers.com, for detailed information on pharmacology books, visit our webs

द्रव्यगुण आधार

द्रव्यगुण के आधारभूत सिद्धान्त

New Syllabus NCISM Paper–1

मुख्य विशेषताएं

- NCISM द्वारा प्रकाशित वर्तमान पाठ्यक्रम (द्रव्यगुण, प्रथम भाग) के सभी बिन्दुओं का समावेश।
- आयुर्वेद एवं आधुनिक दोनों प्रकार के विषयों का समावेश तथा यथोचित स्थान पर तुलना।
- स्नातक, स्नातकोत्तर स्तर के लिए उपयोगी।
- संहिताओं एवं निघण्टुओं के संदर्भों का बृहत् संकलन।
- कर्म खण्ड में विभिन्न मतों की तुलनात्मक परिचर्चा।
- द्रव्यों का कार्मुकता का वैज्ञानिक विवेचन।
- अध्यायान्त में वस्तुनिष्ठ प्रश्न।
- तालिकाओं एवं आरेखों का अधिकतम उपयोग।
- सरल, संगत, एवं स्पष्ट भाषा का प्रयोग।



प्रो. वैद्य सोनिया धीमान बी. ए. एम. एस., एम. डी., पी. एच. डी., चौधरी देवी लाल कॉलेज ऑफ आयुर्वेदा जगाधरी, हरियाणा, भारत में प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्षा (द्रव्यगुण विभाग) हैं। उन्होंने अपनी बी. ए. एम. एस. तथा एम. डी. राजीव गांधी पोस्ट ग्रेजुएट आयुर्वेदिक कॉलेज, पपरोला, हिमाचल प्रदेश, भारत से तथा पी. एच. डी. पारुल यूनिवर्सिटी, वडोदरा, गुजरात, भारत से प्राप्त की है। लेखिका ने अष्टांग निघण्टु पर गूढ़ एवं विस्तृत व्याख्या की है। उन्होंने विषय पर पाँच अन्य पुस्तकें भी प्रकाशित कर के आयुर्वेद में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इनके राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई लेख (articles) प्रकाशित होते रहते हैं।

Printed in India

Available at all medical bookstores or buy online at www.ejaypee.com

JAYPEE BROTHERS
Medical Publishers (P) Ltd.
EMCA House, 23/23-B, Ansari Road,
Daryaganj, New Delhi - 110 002, INDIA
www.jaypeebrothers.com

Join us on facebook.com/JaypeeMedicalPublishers
Follow us on instagram.com/JaypeeMedicalPublishers

Shelving Recommendation
PHARMACOLOGY
औषध विज्ञान

ISBN 978-93-6616-779-4